IJAER/ May- June -2022/Volume-11/Issue-3 ISSN: 2278-9677
International Journal of Arts & Education Research

''जनसंख्या शिक्षा पर अल्पसंख्यक एवं बहुसंख्यक वर्ग के माध्यमिक स्तर के शिक्षकों के विचारों का तुलनात्मक अध्ययन'' (अलवर जिले के विशेष संदर्भ में)**

Saroj Yadav
Research Scholar Singhania University, Pacheri Bari (Jhunjhunu) Raj.

Dr. Sunita Yadav
Supervisor Professor Singhania University, Pacheri Bari (Jhunjhunu) Raj.

सार :–

जनसंख्या शिक्षा की अवधारणा अभी विकास की अवस्था में है। ''प्रोफेसर बर्लेसन ने 'जनसंख्या शिक्षा' शब्द की रचना की। सन् 1962 में कोलम्बिया विश्वविद्यालय के प्रोफेसर वादेन एस. थॉमस और फिलिप एम. हासर ने इसे स्कूल पाठ्यक्रम का अंग बनाने पर बल दिया।'' सन् 1964 में इसी विश्वविद्यालय के शिक्षक प्रशिक्षण विभाग के ''प्रोफेसर स्लोन आर. वेलैण्ड ने इसे जनसंख्या शिक्षा की संज्ञा दी और इसकी विषय सामग्री तैयार की।'' 1970 में यूनेस्को द्वारा बैंकाक में जनसंख्या शिक्षा पर एक क्षेत्रीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस कार्यशाला में जनसंख्या शिक्षा के उद्देश्य निश्चित किये गये और इसके पाठ्यक्रम की रूपरेखा तैयार की गई और जनसंख्या शिक्षा के प्रसार की रणनीति तैयार की गई। इस कार्यशाला में जनसंख्या शिक्षा को अग्रलिखित रूप में परिभाषित किया गया है–

''जनसंख्या शिक्षा एक शैक्षिक कार्यक्रम है जिसमें परिवार, समाज, राष्ट्र एवं विश्व की जनसंख्या की स्थिति का अध्ययन किया जाता है, इस अध्ययन का उद्देश्य छात्रों में इस स्थिति के प्रति विवेकपूर्ण, उत्तरदायित्वपूर्ण दृष्टिकोणों एवं व्यवहार का विकास करना है।

जनसंख्या शिक्षा द्वारा बच्चों, युवकों और प्रौढ़ों की जनसंख्या वृद्धि के कारणों एवं दुष्परिणामों का ज्ञान कराकर उनमें जनसंख्या नियंत्रण और साथ ही उत्पादन में वृद्धि एवं वस्तुओं के सीमित प्रयोग की अभिवृद्धि का विकास किया जाता है।

बर्लेसन ने जनसंख्या संचेतना के रूप में जनसंख्या शिक्षा को स्वीकार किया है। विद्यालय को इसका साधन बताते हुए कहा है–''जनसंख्या वृद्धि के परिणामस्वरूप शिक्षा पर बढ़े व्यय को और भी उचित बढ़ाने का साधन बनाती है। शिक्षा, अध्यापक तथा छात्रों में जनसंख्या संचेतना उत्पन्न करके इस समस्या में परिवर्तन उत्पन्न कर सकती है। जनसंख्या समस्या से सम्बन्धित ज्ञान के प्रति चेतना है। इसके दो उद्देश्य हैं (1) शिक्षा शास्त्री तथा उनसे सम्बन्धित लोग जनसंख्या के महत्व, विस्तार की हानि, तथा प्रकृति को समझें, (2) छात्र तथा अध्यापक अपनी अभिवृत्तियों के स्वरूप को समझें।''

परिचय

संसार की समस्त समस्याओं का मूल कारण तेजी से बढ़ती हुई जनसंख्या है। आज जनसंख्या इतनी तेजी से बढ़ रही है कि भौतिक साधनों का विकास पीछे छूट गया है। भौतिक साधनों (रोटी, कपड़ा और मकान) तथा जनसंख्या के मध्य असंतुलन हो गया है। ये समस्याएँ शोषण, उत्पीड़न को बढ़ावा दे रही है, सामाजिक अन्याय बढ़ रहा है। देश का आर्थिक विकास नहीं हो पाता

है। समाज में बेरोजगारी, निरक्षरता, निर्धनता पूर्ण रूप से व्याप्त रहती है। प्रति व्यक्ति निम्न आय रहने के कारण लोगों का जीवन स्तर निम्न रहता है। यातायात, परिवहन और संचार सेवाओं को इस भीड़–भाड़ ने वस्तुतः ध्वस्त कर दिया है। जनसंख्या वृद्धि के कारण लोगों का जीवन अत्यंत कष्टमय होता जा रहा है। इस पर नियंत्रण करने के लिए पूरे संसार में जनसंख्या शिक्षा का बड़ा महत्व है। जनसंख्या शिक्षा की आवश्यकता है परन्तु भारत में जनसंख्या वद्धि की स्थिति बड़ी विस्फोटक है, जिसे तालिका 1.1 के माध्यम से देखा जा सकता है ।

तालिका 1.1 : भारत में जनसंख्या वृद्धि

क्र.स.	वर्ष	जनसंख्या	वृद्धि दर (प्रतिषत में)
1	1891	23-59	0-00
2	1901	23-89	1-00
3	1911	25-21	5-70
4	1921	25-13	3-00
5	1931	27-89	11-00
6	1941	31-85	14-20
7	1951	36-10	13-30
8	1961	43-91	21-60
9	1971	54-81	24-80
10	1981	68-38	24-75
11	1991	8438	24-75
12	2001	102-40	21-39
13	2011	121-02	17-64
14	2021	139-44	12-5

इसलिए इस देष में जनसंख्या का और भी अधिक महत्व है। उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि हमारे देष में जनसंख्या बहुत तेजी से बढ़ रही है। सन् 2021 में संसार की कुल जनसंख्या के 17.7 प्रतिषत लोग भारत में है तथा दूसरी तरफ भारत का क्षेत्रफल संसार के क्षेत्रफल का कुल 2.4 प्रतिषत है। जब हम इस समय देष की सम्पूर्ण जनसंख्या को अन्न, वस्त्र, आवास, कोयला, तेल, विद्युत आदि की आपूर्ति नहीं कर पा रहे तो इसके लिए उचित षिक्षा एवं स्वास्थ्य की सुविधा को भविष्य में बढ़ती हुई जनसंख्या को कैसे सुलभ करा सकेंगे। जनसंख्या षिक्षा के इस महत्व एवं आवष्यकता को निम्नलिखित रूप में समझा जा सकता है–

(i) नागरिक को खाद्यान, वस्त्र, आवास, कोयला एवं तेल आदि की आपूर्ति के लिए – कौन नहीं जानता कि गत वर्षों में हम खाद्यान में आत्मनिर्भर हो गये थे परन्तु प्रतिवर्ष 2 करोड़ 50 लाख जनसंख्या बढ़ने के कारण हमें अब भी कुछ खाद्य पदार्थ (खाद्य तेल आदि) विदेषों से आयात करने पड़ रहे है। जनसंख्या बढ़ने से रोजगार के अवसर कम होते जा रहे हैं, हमारे देष के लगभग 25 प्रतिषत लोग गरीबी की रेखा से नीचे जीवन जी रहे हैं, वे अपने लिए पर्याप्त वस्त्र और आवास सुविधा प्राप्त नहीं कर पा रहे हैं। कोयले, तेल और बिजली आदि की परेषानियों से भी हम परिचत हैं। जब आज ऐसी स्थिति है तो प्रतिवर्ष लगभग 2 करोड़ 50 लाख जनसंख्या बढ़ने से भविष्य में हमारे देष की क्या स्थिति होगी ? हम प्रतिवर्ष इस बढ़ने वाली जनसंख्या के लिए 4 करोड़ टन अतिरिक्त खाद्यान, 100 करोड़ मीटर अतिरिक्त कपड़े और 80 लाख अतिरिक्त

मकानों की व्यवस्था कैसे करेंगे? और यदि जनसंख्या वृद्धि की यही गति रही तो उसके लिए कोयले एवं तेल आदि की आपूर्ति कैसे करेंगे? यदि, हम चाहते है कि हमारे देष की जनसंख्या को इन सब आवष्यक वस्तुओं की पूर्ति होती रहे तो आवष्यक है कि जनसंख्या पर नियत्रंण किया जाए, उत्पादन में वृद्धि की जाए और वस्तुओं का विवेकपूर्ण उपयोग किया जाए। जनमानस को इसके लिए तैयार करने के लिए जनसंख्या षिक्षा की बड़ी आवष्यकता है।

(ii) नागरिकों के लिए षिक्षा, एवं यातायात आदि की उचित व्यवस्था के लिए– हमारे देष की आज स्थिति यह है कि हम 6–11 आयु वर्ग के लगभग 90 प्रतिषत बच्चों और 11–14 आयु वर्ग के लगभग 80 प्रतिषत बच्चों को षिक्षा की सुविधा प्रदान कर पा रहे हैं, गरीब लोगों को पर्याप्त सुविधा न मिलने के कारण बेमौत मरना पड़ रहा है और बसों और रेलों में खड़े होने तक को जगह नहीं मिलती। षिक्षा आयोजकों को चिन्ता है कि वे प्रतिवर्ष 2 करोड़ 50 लाख बढ़ती हुई जनसंख्या के लिए स्कूल, कॉलेज, षिक्षक और अन्य आवष्यक सामग्री की व्यवस्था कैसे करेंगे? स्वास्थ्य मन्त्रालय को चिन्ता है कि वे इतनी तेजी से बढ़ती हुई जनसंख्या को स्वास्थ्य सुविधाऐं कैसे उपलब्ध कराऐं और यातायात सम्बन्धी मन्त्रालयों की यह चिन्ता है कि वे अतिरिक्त आवष्यक बसें और ट्रेनों की व्यवस्था कैसे करेंगे, आदि। इन सब समस्याओं का सबसे उत्तम समाधान जनसंख्या नियन्त्रण है और लोगों को जनसंख्या नियन्त्रण के लिए तैयार करने के लिए जनसंख्या षिक्षा बड़ी कारगर सिद्ध हो सकती है। इस दृष्टि से भी भारत में जनसंख्या षिक्षा का बड़ा महत्व है, उसकी बड़ी आवष्यकता है।

(iii) पर्यावरण संरक्षण, उचित पोषण और स्वास्थ्य विकास के लिए– हम देख रहे हैं कि हमारे देष में जैसे–जैसे जनसंख्या बढ़ रही है, जंगल कटते जा रहे हें, प्राकृतिक संसाधन कम होते जा रहे हैं और उद्योग बढते जा रहे हैं, परिणामस्वरूप प्रदूषण बढ़ता जा रहा है। स्वच्छ जल, स्वच्छ वायु और पौष्टिक पदार्थों के अभाव में बच्चों का उचित पोषण नहीं हो पा रहा, लोग रोगग्रस्त हो रहे हैं, उनका स्वास्थ्य बिगड़ रहा है। इस दृष्टि से जनसंख्या नियन्त्रण आवष्यक है और इसके लिए जनसंख्या षिक्षा आवष्यक है।

(iv) सामाजिक जीवन के उन्नयन के लिए– हम देख रहे हैं कि हमारे देष में जैसे–जैसे जनसंख्या बढ़ रही है तैसे–तैसे यहाँ के समाज में अपराध बढ़ रहे है, चोरी–डकैती बढ़ रही है, हमारे समाजिक जीवन का ह्रास होता जा रहा है। यदि हम इस ह्रास से बचना चाहते है और अपने सामाजिक जीवन का उन्नयन चाहते है तो हमें जनसंख्या नियंत्रण करना आवष्यक है। इस दृष्टि से भी हमारे देष में जनसंख्या षिक्षा का बड़ा महत्व है।, उसकी बड़ी आवष्यकता है।

(v) राष्ट्र के आर्थिक विकास के लिए – किसी राष्ट्र के आर्थिक विकास के लिए पहली शर्त यह है कि उसमें उपभोग से अधिक उत्पादन हो। यूँ स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद हमारे देष में सभी क्षेत्रों में उत्पादन बढ़ा है परन्तु बढ़ती हुई जनसंख्या के दबाव में सब कुछ अपर्याप्त साबित हो रहा है। सच बात यह है कि जनसंख्या के दबाव में हमारी सभी विकास योजनाएँ सफल नहीं हो पा रही है।

(vi) नागरिकों के जीवन स्तर को ऊँचा उठाने के लिए – किसी देष के नागरिकों का जीवन स्तर उस देष की आर्थिक स्थिति पर निर्भर करता है और उसकी आर्थिक स्थिति निर्भर करती है, प्राकृतिक एवं मानव संसाधनों और औद्योगिकीकरण पर तभी ये साधन वहाँ की जनसंख्या की दृष्टि से अधिक होते है। अमेरिका में संसार की कुल जनसंख्या के केवल 4.5 प्रतिषत लोग रहते है और वहाँ उत्पादन संसार के कुल उत्पादन का 50 प्रतिषत होता है, इसलिए वह आर्थिक दृष्टि से बहुत विकसित है। इसके विपरीत हमारे देष में संसार की कुल जनसंख्या के 17.7 प्रतिषत लोग रहते है और यहाँ उत्पादन संसार के कुल उत्पादन का केवल 41 प्रतिषत होता है। यही कारण है कि हमारे देष का आर्थिक विकास नहीं हो पा रहा है और बढ़ती हुई जनसंख्या के दबाव में रोजगार के अवसर भी कम होते जा रहे है। अफसोस की बात तो यह है कि हमारे देष के लगभग 25 प्रतिषत लोग गरीबी की रेखा से नीचे जीवन व्यतीत कर रहे हैं। यदि हम चाहते हैं कि हमारे देष के लोगों का जीवन स्तर उठे तो हमें जनसंख्या पर नियन्त्रण करना होगा, उत्पादन बढ़ाना होगा और रोजगार के अवसर बढ़ाने होंगे।

भारत में जनसंख्या षिक्षा परियोजना (1980) इन क्षेत्रों में कार्य करती है :–

(क) पाठ्यक्रम एवं सामग्री विकास।

(ख) विद्यमान पाठ्यक्रम एवं पाठ्य प्रस्तुकों में जनसंख्या विषय प्रकरण।

(ग) वर्तमान परीक्षा प्रणाली में सुधार।

(घ) पाठ्य सहगामी क्रियाओं का संचालन।

(ड़) परियोजना के विभिन्न पक्षों का मूल्यांकन।

यह परियोजना प्राथमिक, माध्यमिक स्तर के छात्रों, षिक्षकों, प्रषिक्षण संस्थाओं, महाविद्यालयों तथ अनौपचारिक षिक्षा केन्द्रों पर लागू होगी।

राजस्थान की जनसंख्या की स्थिति :–

राजस्थान की जनसंख्या 2021 के अनुसार 8.01 करोड़ है तथा राज्य की जनसंख्या में कुल वृद्धि 21.03 प्रतिषत दर्ज की गई है। राजस्थान की 2021 की अनुमानित जनसंख्या 80129740 कुल है। जिसमें पुरूषों एवं महिलाओं की संख्या का अनुपात 6:4 है।

अलवर जिले की जनसंख्या की स्थिति :–

2011 की जनगणना के अनुसार अलवर जिले की कुल आबादी 3674179 तथा पुरूष जनसंख्या 1939026 एवं महिला जनसंख्या 1735153 है। क्षेत्र में प्रतिवर्ग कि.मी. जनसंख्या 8380 तथा जनसंख्या घनत्व 438 प्रतिवर्ग कि.मी. है। लिंगानुपात 895 एवं 0–6 वर्ष के बच्चों का लिंगानुपात 865 है। अलवर की कुल साक्षरता में 70.72 प्रतिषत पुरूष साक्षरता 83.75 प्रतिषत व महिला साक्षरता 56.25 प्रतिषत है तथा अलवर जिले की धर्म के अनुसार जनसंख्या का विवरण निम्नानुसार है :–

हिन्दू जनसंख्या 3039279 अर्थात 82.72 प्रतिषत है मुस्लिम जनसंख्या 547335 अर्थात 14.90 प्रतिषत है। ईसाई जनसंख्या 2696 अर्थात 0.07 प्रतिषत तथा सिक्ख जनसंख्या 64532 अर्थात 1.76 प्रतिषत है व बौद्ध जनसंख्या 4374 अर्थात 0.12 प्रतिषत है। जैन जनसंख्या 13221 अर्थात 0.36 प्रतिषत अघोषित जनसंख्या 2384 अर्थात 0.06 प्रतिषत है। अन्य 348 अर्थात 0.01 प्रतिषत है। इस प्रकार जिले की कुल जनसंख्या 3674179 है।

2021 की जनगणना के अनुसार अलवर जिले की कुल आबादी 4261313 तथा पुरूष जनसंख्या 2248882 एवं महिला जनसंख्या 1460150 है।

▶ विषय के अध्ययन की आवष्यकता

आज जनसंख्या की दृष्टि से भारत का विष्व में दूसरा स्थान है। स्वतंत्रता के पष्चात् 1951 की प्रथम जनगणना से प्राप्त आँकड़ों को देखते तो स्पष्ट हो जाता है कि 1951 में जहाँ हमारी जनसंख्या 36.10 करोड़ तथा उसकी वृद्धि दर 13.30 थी वही आज बढ़ते–बढ़ते 2021 में 139.44 करोड़ हो गयी है। जिसने अनेक समस्याओं को जन्म दिया है। जनसंख्या की अधिकता भारत की एक प्रमुख समस्या है। भारत का क्षेत्रफल सम्पूर्ण विष्व का 1358.9 वर्ग किलोमीटर है। विष्व के चार अधिक जनसंख्या वाले देष – चीन, भारत, सोवियत संघ, संयुक्त राज्य अमेरिका हैं। यहाँ यह बात ध्यान देने योग्य है कि रूस और अमेरिका का क्षेत्रफल भारत से कहीं अधिक है। किसी देष की जनसंख्या को एक दषक बाद जनगणना द्वारा ज्ञात किया जाता है। भारत में जनगणना कार्य सन् 1872 में प्राम्भ किया गया। 1881 में हर दसवें वर्ष हमारे देष की जनगणना की जाती रही है। भारत में वर्तमान जनगणना सन् 2021 में हुई है। तालिका संख्या 1.2 के द्वारा भारत की जनसंख्या एवं जनसंख्या की दषकीय वृद्धि दर को दर्षाया गया है।

तालिका संख्या 1.2 भारत की जनसंख्या

क्र.स.	वर्ष	जनसंख्या (करोड़ में)	वृद्धि दर (प्रतिषत में)
1	1891	23-59	0-00
2	1901	23-89	1-00
3	1911	25-21	5-70
4	1921	25-13	3-00
5	1931	27-89	11-00
6	1941	31-85	14-20
7	1951	36-10	13-30
8	1961	43-91	21-60
9	1971	54-81	24-80
10	1981	68-38	24-75
11	1991	8438	24-75
12	2001	102-40	21-39
13	2011	121-02	17-64
14-	2021	139-44	12-5

उपरोक्त सारिणी से स्टष्ट होता है कि सन् 1921 तक भारत की जनसंख्या वृद्धि दर कम थी परन्तु 1921 के पश्चात् भारत की जनसंख्या निरन्तर बढ़ रही है।

जनसंख्या वृद्धि में परिवार की महती भूमिका है, परिवार आज असीमित हो चुका है, जिसके परिणाम स्वरूप जनसंख्या का अनियन्त्रित होना। जनसंख्या वृद्धि से आज मनुष्य जाति का अस्तित्व खतरे में पड़ गया है। सम्पूर्ण देष को भोजन, वस्त्र, मकान, स्वास्थ्य षिक्षा के मूल साधन जुटा पाना असंभव हो रहा है। बढ़ती समस्याओं के समाधान में आज सीमित परिवार के महत्व को स्वीकारा जा रहा है। भारत में बढ़ती हुई आबादी पर अंकुष लगाने के लिए नियंत्रित जीवन और परिवार नियोजन प्रभावषाली तरीके हैं। लोग छोटे परिवार के सिद्धान्त को अपनाये, यदि व्यक्तियों के जीवन स्तर को उच्च करना तथा विकास के कार्यों का अधिक से अधिक लाभ उन तक पहुँचाना है तो आबादी की वृद्धि को अवष्य ही कम करना होगा। स्वतंत्रता प्राप्ति से पहले गाँव के भारत का मानचित्र आधुनिक भारत से भिन्न था। जिस तीव्र गति से हमारे देष की जनसंख्या बढ़ रही है उससे चिन्तित होना स्वाभाविक है। प्रतिवर्ष देषों में एक नये महाद्वीप की जनसंख्या जुड़ जाती है। आर्थिक एवं सामाजिक प्रगति के प्रयासों को जनसंख्या का दानव चाट जाता है। हमारी प्रति व्यक्ति आय निरन्तर घट रही है और बेरोजगारी की सुरक्षा हमारी राष्ट्रीय उपलब्धियों को निगलने के लिए मुँह फाड़े खड़ी है। इस समय देष आर्थिक, सामाजिक संकटकाल में है। जिसमें जन्म–दर यथावत् ऊँची है, लेकिन मृत्यु–दर बहुत कम हो गई है। फलस्वरूप जनसंख्या में उत्तरोतर वृद्धि हो रही है। आवास की समस्या, कृषि योग्य भूमि को दिन–प्रतिदिन कम करती जा रही है। जिससे परिवारों की आमदनी प्रभावित हुई है। जनसंख्या की निरन्तर वद्धि ने भूमि पर आवष्यकता से अधिक जनाधार बढ़ा लिया है जिससे कृषि सम्बन्धी अनेक समस्याएँ उत्पन्न हुई हैं। हमारे देष में जनसंख्या वृद्धि की गति इतनी बढ़ी है कि विष्व के चार अधिक जनसंख्या वाले देष में भारत का विष्व में दूसरा स्थान है।

आज देष निरन्तर बढ़ रही जनसंख्या की विकराल समस्या से जूझ रहा है। जनसंख्या वृद्धि के कारण प्रति व्यक्ति आय कम हो रही है। गरीबी की रेखा के नीचे आने वाले दलित, पिछड़े व सामान्य वर्ग के लोगों की गरीबी कम होने की अपेक्षा उसमें उत्तरोत्तर वृद्धि हो रही है। प्रदूषण बढ़ रहा है और भोजन, जल, आवास, कपड़ा और विद्युत आदि की आपूर्ति कर पाना कठिन होता जा रहा है।

किसी देष की भूमि चाहे कितनी उपजाऊ क्यों न हो उस देष में नदी, पहाड़ और जंगल आदि अन्य प्राकृतिक साधन पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध हो, किन्तु यदि वहाँ की जनसंख्या आवष्यकता से बहुत कम या बहुत अधिक है अथवा वहाँ के लोग रोगी, आलसी, दुर्बल व चरित्रहीन हैं तो निष्चय ही वह देष उन्नति के पथ पर तीव्र गति से आगे नहीं बढ़ सकेगा। इसके विपरीत यदि किसी देष की जनसंख्या भाग और गुणा की दृष्टि से ठीक है तो अन्य बातों के समान रहने पर वह बड़ी आसानी और तेजी के साथ आर्थिक और अन्य क्षेत्रों में उन्नति कर सकता है। यह सब तभी सम्भव है जबकि उस देष की जनसंख्या भाग और गुणा की दृष्टि से ठीक है तो अन्य बातों के समान रहने पर वह बड़ी आसानी और तेजी के साथ आर्थिक और अन्य क्षेत्रों में उन्नति कर सकता है। यह सब तभी सम्भव है जबकि उस देष की जनसंख्या नियन्त्रित हो देष समृद्धषाली हो। इसके लिए आवष्यक ज्ञान हेतु जनसंख्या षिक्षा की महती आवष्यकता है। जनसंख्या षिक्षा के प्रसार में षिक्षकों की भूमिका महत्वपूर्ण है।

परन्तु शोध कार्य में प्रत्येक शब्द को निष्चित अर्थ में ही प्रयुक्त किया जाता है। जनसंख्या की वृद्धि आज के युग की महान चिन्ता है। यह राष्ट्र के विकास के समक्ष एक गम्भीर प्रष्न चिन्ह है। जनसंख्या षिक्षा के माध्यम से भावी पीढ़ी के संवेदन और संचेतनशील बनाने की भूमिका षिक्षक को ही निभानी है। विद्यार्थियों के दृष्टिकोण में ऐसा परिवर्तन लाना है जिससे वे इसे जीवन शैली के रूप में अपना सकें। वास्तव में सीमित परिवार और जनसंख्या षिक्षा इस बात पर निर्भर करती है कि उसके प्रति आम जनता का दृष्टिकोण क्या है? चूँकि दृष्टिकोण बनाने में षिक्षक एक प्रमुख साधन है और षिक्षा षिक्षकों के द्वारा शेष समाज को दी जाती है। इसलिए समाज के पढ़े लिखे वर्ग पर षिक्षक के दृष्टिकोण की छाप किसी न किसी रूप में अवष्य रहती है। जनसंख्या षिक्षा और सीमित परिवार के प्रति षिक्षकों के दृष्टिकोण, सामाजिक प्रभाव की दृष्टि से विषिष्ट महत्व रखते हैं। आज की स्थिति में सीमित परिवार और षिक्षा सफलता देखनी है तो षिक्षकों के दृष्टिकोण को जानना, समझना अत्यन्त आवष्यक है।

षिक्षक का प्राथमिक स्तर पर सीमित परिवार और जनसंख्या षिक्षा के प्रति दृटिकोण अधिक महत्वपूर्ण नही होता है क्योंकि छोटे उम्र के बालकों में इस समस्या का कोई महत्व नही रहता है और न ही इस आयु में बच्चों पर परिवार और जनसंख्या सम्बन्धी कोई अवधारणा रहती है। उनकी किषोरावस्था में बालकों में जो परिवर्तन होते है और प्रजनन सम्बन्धी उनकी प्रवृत्तियों का जैसे–जैसे विकास होता है वह सीमित परिवार और जनसंख्या षिक्षा के प्रति दृष्टिकोण बनाने का निष्चित आधार होता है। इसलिए माध्यमिक स्तर पर षिक्षकों का दृष्टिकोण इस विषय के प्रति जैसा होता है वही दृष्टिकोण इस आयु के विद्यार्थी वर्ग में पहुँचता है और वह समाज के अन्य व्यक्तियों में पहुँचता है। यह प्रक्रिया सतत् और इसके परिणाम बालकों पर स्पष्ट रूप से दिखाई देने लगते हैं। इसलिए माध्यमिक स्तर पर षिक्षकों में सीमित परिवार और जनसंख्या षिक्षा सम्बन्धी दृष्टिकोण का अध्ययन नितान्त आवष्यक हो जाता है।

▶ षोध के उद्देष्य

(i) जन्म–दर, मृत्यु दर और जनसंख्या वृद्धि की जानकारी प्रदान करना।

(ii) महिलाओं को स्वास्थ्य, मातृ–षिषु कल्याण, परिवार नियोजन करने के कार्यक्रम व पुष्टाचार की जानकारी प्रदान करना।

(iii) बढ़ती हुई जनसंख्या का पर्यावरण पर पड़ने वाले प्रभाव से अवगत कराना।

(iv) जनसंख्या षिक्षा के प्रसार से अंधविष्वास, बाल–विवाह व सामाजिक कुरीतियों को दूर हटाना।

(v) छात्रों को आधुनिक संसार की सबसे महत्वपूर्ण घटना के रूप में जनसंख्या की वृद्धि एवं कारणों का ज्ञान प्रदान करना।

(vi) छात्रों को परिवार के आकार एवं रहन–सहन के स्तर में सम्बन्ध और कम आय वाले बड़े परिवार की कठिनाइयाँ बताकर उनसे छोटे परिवार की वांछनीयता के विचार को सुदृढ़ करना।

(vii) दलित वर्ग के माध्यमिक स्तर के षिक्षकों एवं षिक्षकाओं का जनसंख्या षिक्षा एवं जनसंख्या नियन्त्रण पर उनके विचारों का तुलनात्मक अध्ययन करना।

(viii) पिछड़े वर्ग के माध्यमिक स्तर के षिक्षकों एवं षिक्षिकाओं का जनसंख्या षिक्षा एवं जनसंख्या नियन्त्रण पर उनके विचारों का तुलनात्मक अध्ययन करना।

(xi) सामान्य वर्ग के माध्यमिक स्तर के षिक्षकों एवं षिक्षिकाओं का जनसंख्या षिक्षा एवं जनसंख्या नियन्त्रण पर उनके विचारों का तुलनात्मक अध्ययन करना।

▶ शोध की परिकल्पनाऐं :–

प्रस्तुत शोध में शोधार्थी ने समस्या के निराकरण के लिए चार परिकल्पनाओं का प्रतिपादन किया है। प्रत्येक परिकल्पना को पांच उप भागों में विभाजित किया गया है। ये चार मुख्य परिकल्पनायें निम्नवत् है :–

(i) माध्यमिक स्तर के अध्यापक एवं अध्यापिकाओं का जनसंख्या षिक्षा और जनसंख्या नियन्त्रण के पति सकरात्मक दृष्टिकोण होगा।

(ii) जनसंख्या षिक्षा और जनसंख्या नियन्त्रण में अध्यापिकओं एवं अध्यापक समान रूप से निष्ठावान होंगे।

(iii) सामाजिक एवं आर्थिक स्तर जनसंख्या नियन्त्रण पर प्रभाव नहीं डालता है।

(iv) परिकल्पनाओं के आधार पर समस्या के निराकरण हेतु की गई गणना से प्राप्त परिणामों के आधार पर निष्कर्ष निकाला जायेगा कि उपरोक्त जनसंख्या षिक्षा और जनसंख्या नियन्त्रण पर प्रभाव डालते हैं या नहीं।

▶ शोध की विधि

शोध विधि सीमित क्षेत्र मे किसी समस्या का सर्वांगीण विष्लेषण है। किसी भी कार्य की सत्यता की प्रमाणिकता को ज्ञात करने के लिए कार्य करना पड़ता है। इस कार्य के योग को ही शोध विधि कहते है। शोध कार्य में आँकड़ों को एकत्रित करने, विष्लेषण करने व प्रतिवेदन प्रस्तुत करने की प्रमुख विधियाँ ऐतिहासिक, वर्णनात्मक, प्रयोगात्मक, क्रियात्मक और तुलनात्मक तथा सर्वेक्षण आदि हैं।

प्रस्तुत शोध में दो चरों के सम्बन्ध में षिक्षक एवं षिक्षिकाओं के दृष्टिकोणों को जानने एवं विभिन्न सूचनाओं के संकलन के लिए सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया जायेगा। प्रयोगात्मक एवं तुलनात्मक विधियों के आधार पर प्रष्नोत्तरों की आंकिक गणना करके परिणाम और निष्कर्ष प्राप्त किये जायेंगे। दो समूहों के विचारों के सम्बन्ध में प्रयोग से प्राप्त अंकों की आंकिक गणना करके क्रांतिक निष्पत्ति (समालोचनात्मक अनुपात) ज्ञात की जायेगी, जिससे विचारों की समानता एवं विरोधाभास स्पष्ट करना संभव होगा।

▶ शोध में प्रयुक्त उपकरण

शोध प्रक्रिया की महत्वपूर्ण कड़ी सामग्री का संग्रह है। शोध के उद्देष्य की पूर्ति एवं परिकल्पनाओं का परीक्षण सम्बन्धित सूचनाओं एवं सामग्री के विष्लेषण पर निर्भर करता है। प्रत्येक शोध मे ऐसे कितने ही चर, कितनी ही ऐसी परिस्थितियाँ एवं घटनाएँ समाहित रहती है, जिनके विषय में विभिन्न प्रकार की जानकारी प्राप्त करना उनका मापन करना एवं मूल्यांकन करना अनिवार्य होता है। जानकारी अनेक उपकरणों एवं विधियों के द्वारा प्राप्त की जाती है। शोध सामग्री के संग्रह हेतु जिन विविध प्रकार के उपकरणों का प्रयोग किया जाता है

प्रस्तुत शोध में प्रष्नावली, अनुसूची, साक्षात्कार एवं चेक लिस्ट का प्रयोग करते हुए टी–टैस्ट का उपयोग करके संगणना की जायेगी।

▶ निष्कर्ष :–

भारत में जनसंख्या वृद्धि की स्थिति के आंकलन से हम इस निष्कर्ष पर पहुँचे है कि देष एवं राज्यों में जनसंख्या वृद्धि का स्तर इस बात को सिद्ध करता है कि राष्ट्र में जनसंख्या वृद्धि की दर विष्व में सबसे तेज है एवं हाल ही में वर्तमान रिपोर्ट इस बात को प्रदर्षित करती है कि वर्तमान में भारत की जनसंख्या वृद्धि की दर को नियंत्रित करना प्राथमिक आवष्यकता है पिछले 5 वर्षों में राष्ट्र की आर्थिक अर्थव्यवस्था में तेजी से वृद्धि हुई है परन्तु जनसंख्या वृद्धि की तीव्र दर के कारण जनसंख्या षिक्षा की आवष्यकता सर्वाधिक महसूस की जा रही है।

जनसंख्या षिक्षा एक शैक्षिक कार्यक्रम है जिसमें परिवार, समाज, राष्ट्र एवं विष्व की जनसंख्या की स्थिति का अध्ययन किया जाता है इस अध्ययन का प्रमुख उददेष्य जनसंख्या वद्धि के प्रति विद्यार्थियों में विवेकपूर्ण, उत्तरदायित्वपूर्ण दृष्टिकोणों एवं व्यवहार का विकास करना है।

जनसंख्या षिक्षा द्वारा बच्चों, युवकों और प्रौढ़ों को जनसंख्या वृद्धि के कारणों एवं दुष्परिणामों का ज्ञान करवाकर उनमें जनसंख्या निमंत्रण और साथ ही उत्पादन में वृद्धि एवं वस्तुओं के सीमित प्रयोग की अभिवृति का विकास करना प्रमुख उद्देष्य है। अतः जनसंख्या षिक्षा ही एक मात्र माध्यम है। जिससे षिक्षा के माध्यमिक स्तर से अध्यापकों द्वारा स्वयं जागृत होकर आने वाली पीढ़ियों की समझ को जनसंख्या वृद्धि के प्रति जागरूक करके अच्छे जीवन व आवष्यक संसाधनों के अतिरिक्त दोहन को सीमित किया जा सकता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. अग्निहोत्री, रविन्द्र 2002 – आधुनिक भारतीय षिक्षा समस्याएँ एवं समाधान, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर।
2. चौबे, एस.पी. 2011 – भारतीय षिक्षा का इतिहास, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा।
3. त्यागी, जे.डी. 2017 – भारतीय षिक्षा का प्ररिप्रेक्ष्य, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा।
4. कपिल, एच.के. – अनुसंधान विधियाँ, भार्गव प्रकाषन मंदिर, आगरा।
5. शुक्ल, आर.एस. 2015 – शैक्षिक अनुसंधान की पद्धतियाँ।
6. जायसवाल, सीताराम 2007 – षिक्षा मनोविज्ञान, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा।
7. पाठक, पी.डी. 2018 – षिक्षा मनोविज्ञान, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा।
8. जैन, शषि के. 2011 : जनसंख्या अध्ययन।
9. यादव सरोज 2019 – पोपुलेषन एजूकेषन।
10. राज्य षिक्षा संस्थान, उ.प्र. 2017 : जनसंख्या षिक्षा।
11. लाल एवं शर्मा 2015 – भारतीय षिक्षा का इतिहास, विकास एवं समस्यायें, आर.एल. बुक डिपो, मेरठ
12. आहूजा राम 2013 – सामाजिक समस्याएँ, रावत पब्लिकेषन, जयपुर।
13. पंत, जीवन चन्द्र 2015 – जनांकिकी।
14. प्रतियोगिता दर्पण/ भारतीय अर्थव्यवस्था, नवम्बर 2017
15. सिंह, यू.वी. 2020 – पर्यावरणीय भूगोल, राजीव प्रकाषन, मेरठ।